खुशमिज़ाज़ सुअर!

नैन्सी ज्वेल, चित्र- बेन शीटर

हिंदी: छाया भदौरिया

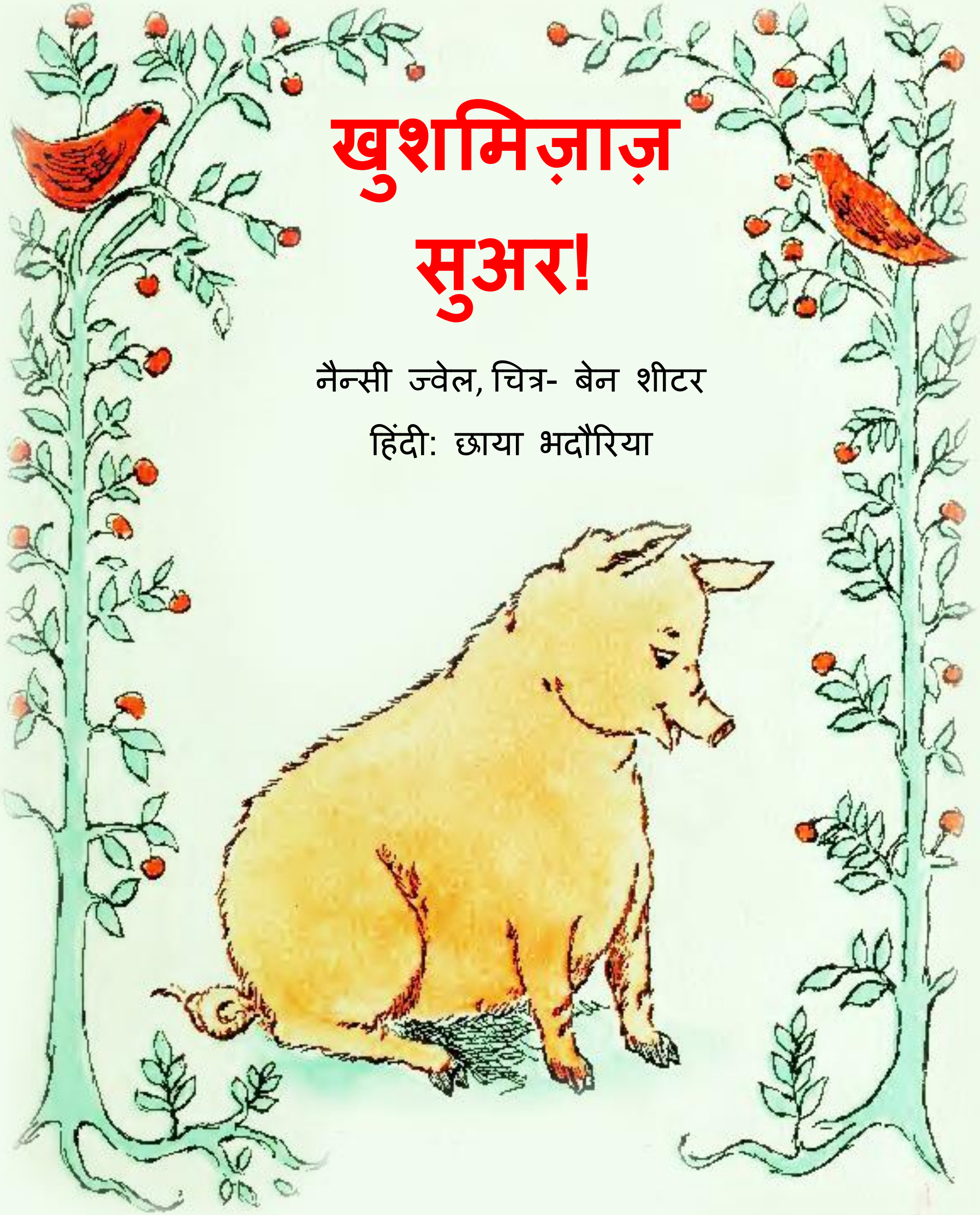

खुशमिज़ाज़ सुअर!

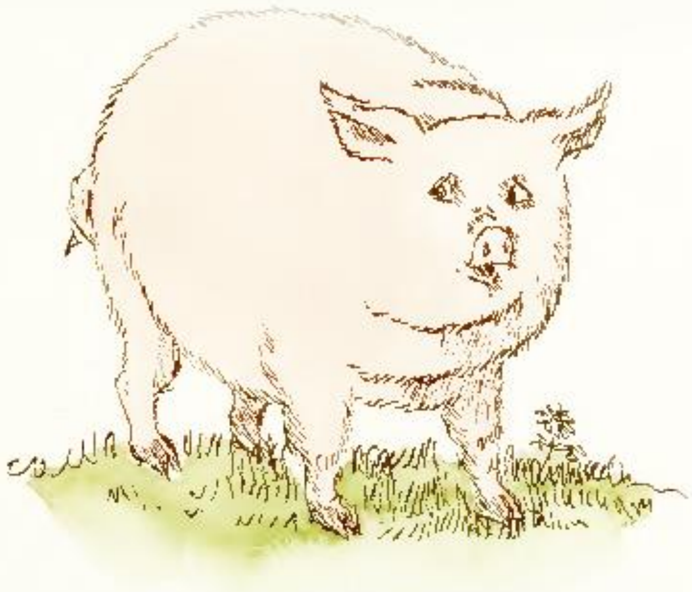

नैन्सी ज्वेल, चित्र- बेन शीटर

हिंदी: छाया भदौरिया

"मुझे अच्छा लग रहा है," सुअर ने खलिहान के फर्श पर धूप के एक टुकड़े को घूरते हुए कहा। "मैं इतना खुश हूँ कि मैं किसी को बताने के लिए इंतजार नहीं कर सकता!"

सुअर बाहर की ओर दौड़ गया। "सब लोग कहाँ हैं?" उसने पुकारा। "ये मैं हूँ, सुअर!" किसी ने जवाब नही दिया।

"ओह, ठीक है," सुअर ने कहा, "मैं वैसे भी यहीं पर हूँ।" तभी उसके मन में एक भयानक विचार आया। लगता है कि सब छुपे हुए हैं।

"यह बेवक़ूफ़ी है। मुझे बस अपने लिए खेद महसूस हो रहा है।" उसने कहा।

"फिर से खुश हो जाओ, सुअर!"

सुअर ने अपनी घुंघराली पूँछ लहराई।

"मैंने कहा खुश हो जाओ, सुअर!" वह चिल्लाया।

सुअर कीचड़ में लोट गया।

सूअर फिर से लोट-पोट हो गया।

"मुझे कीचड़ पसंद है!" सुअर ने कहा।

"तो यह इतना ठंडा और भयानक क्यों लग रहा है?

मुझे भूख लगी होगी।"

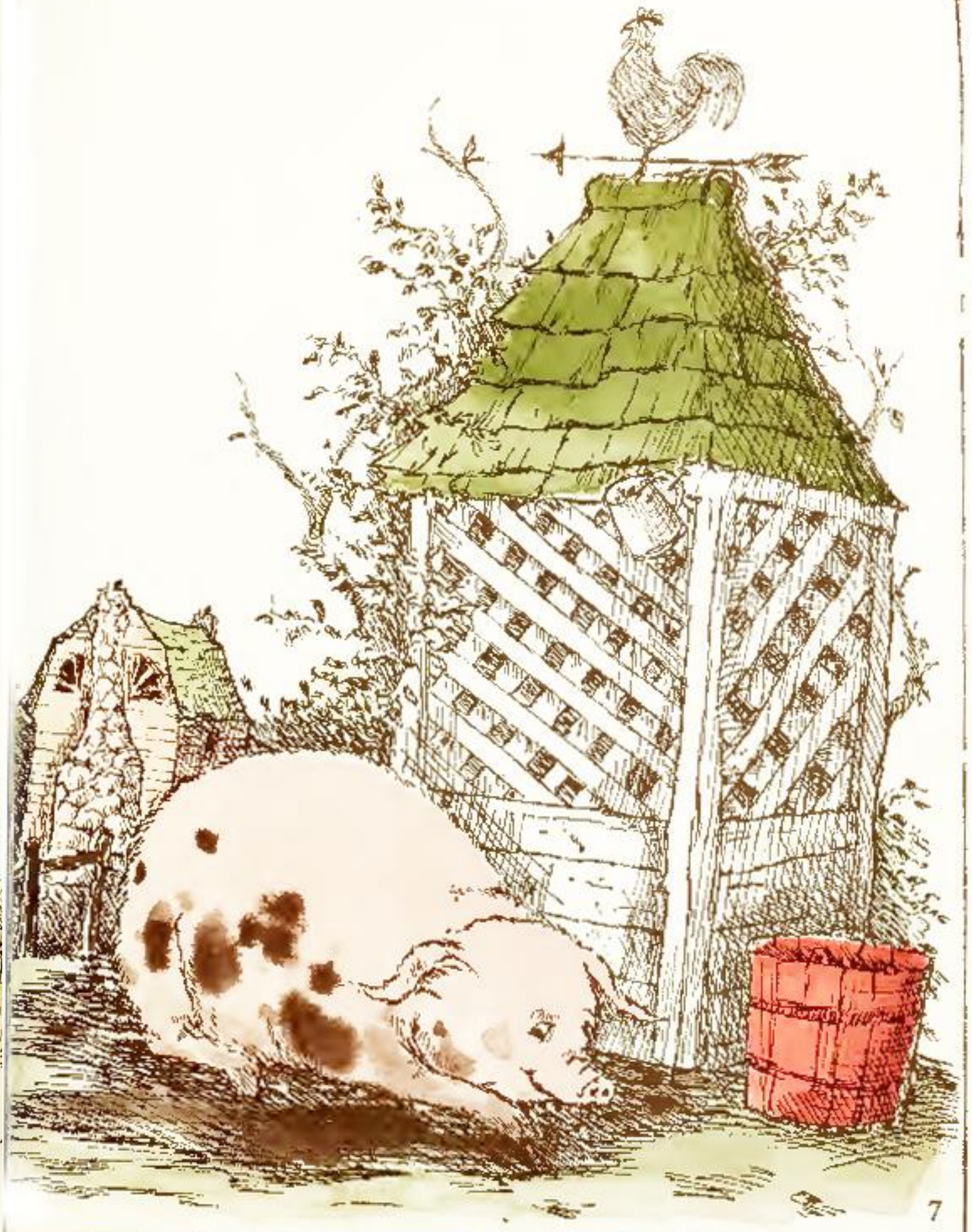

सुअर ने अपना सिर खाने की नाँद में फँसा लिया।
"इस भोजन में कोई स्वाद नहीं है।
लगता है कि मैं बड़ा कौर नहीं खा रहा हूँ।"
सुअर ने अपने होठों को चाटते हुए बड़ा कौर लिया।
"इसका कोई उपयोग नहीं है।
मुझे अकेले खाना खाने का मन नहीं है।
मुझे कुछ भी अकेले करने का मन नहीं है।”

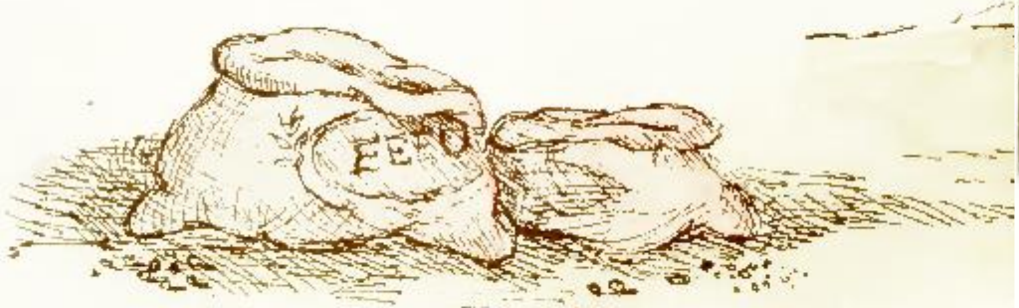

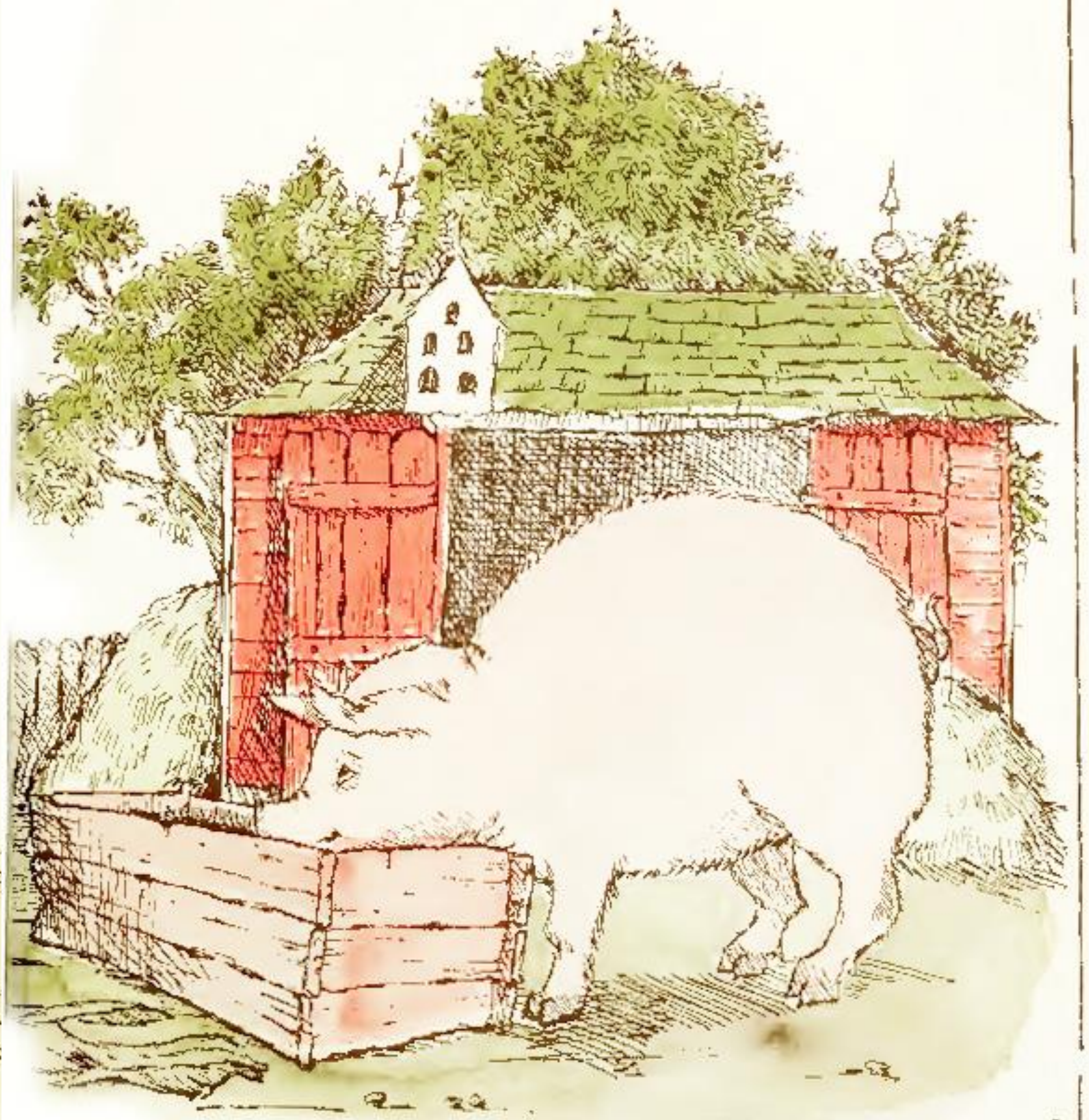

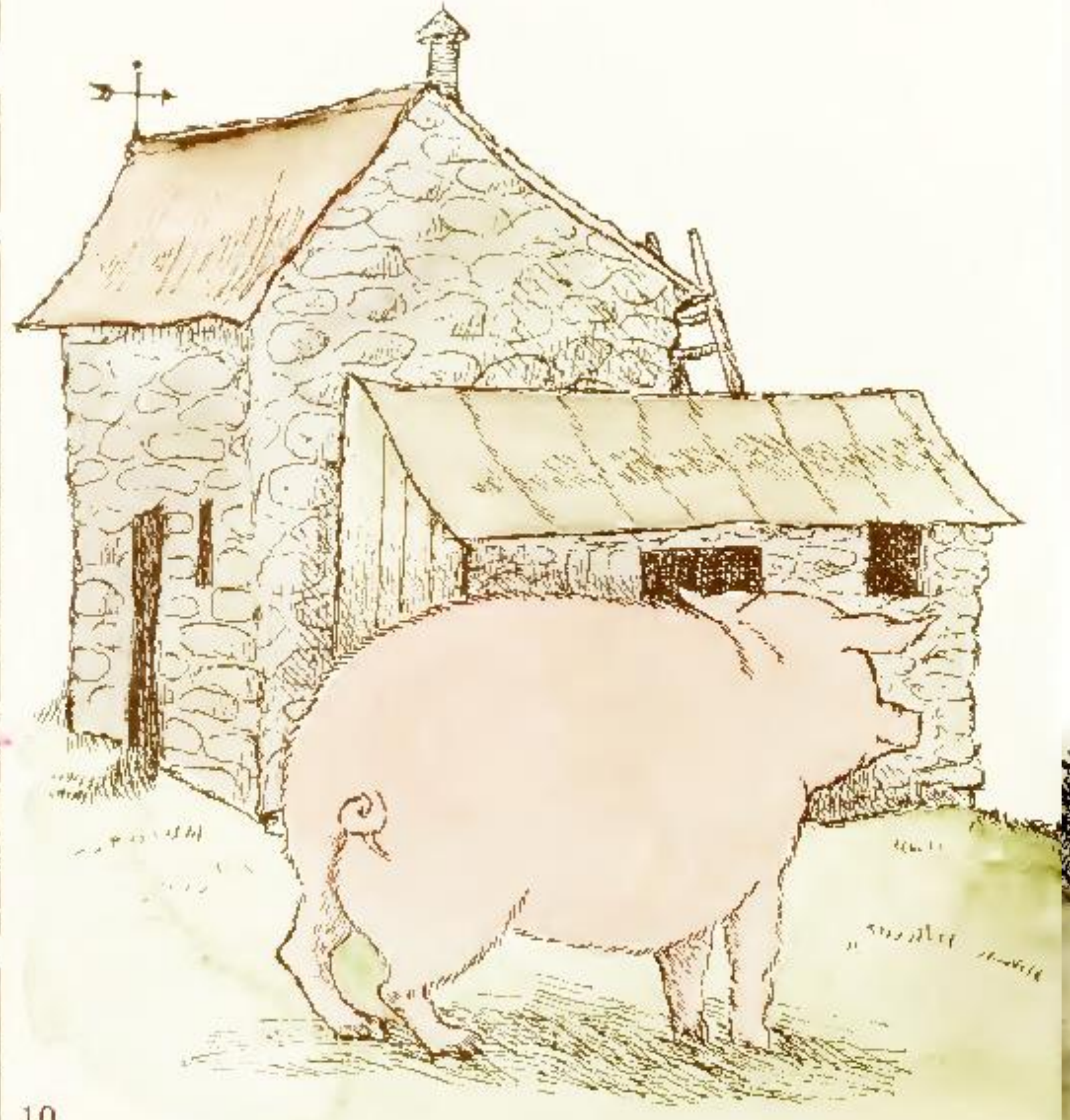

सुअर ने जंगल में खुशी से भरी हुई चीखें सुनीं।

"ओह, नहीं!" वह चिल्लाया।

मुझे यकीन है कि मेरे सभी दोस्त एक साथ एक गेम खेल रहे हैं।

और वे मुझसे पूछना भूल गए!

मैं सोने जाता हूँ।

फिर मुझे अकेलापन महसूस नहीं होगा।

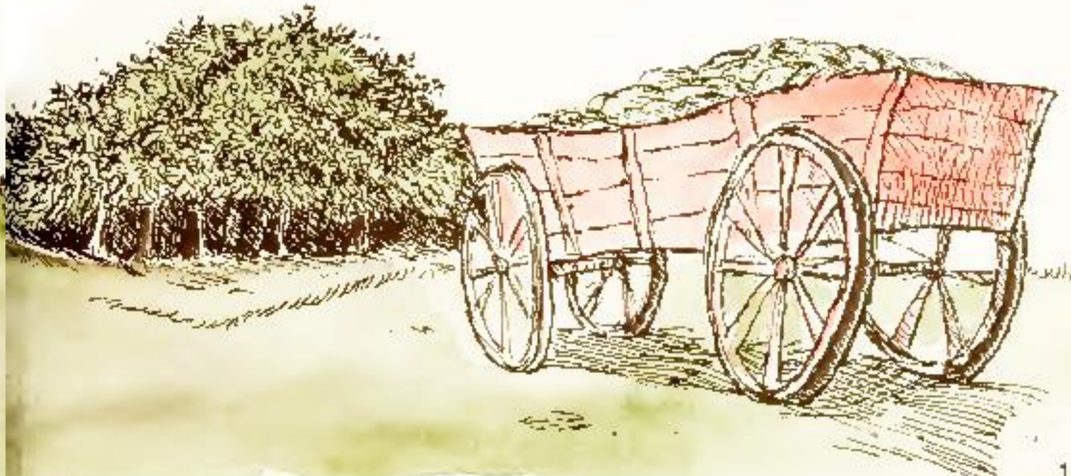

सुअर ने अपनी आँखें बंद कर लीं
और बिल्कुल शांत लेटा रहा।
"कुछ मत सोचो, सुअर," उसने कहा।
हवा ने गूलर के पेड़ की शाखाओं को झकझोर दिया।
एक ट्रैक्टर, जोर से खड़खड़ाया।
"इतने शोरगुल में तो मैं सो ही नहीं सकता!"
सुअर ने फिर कोशिश की।

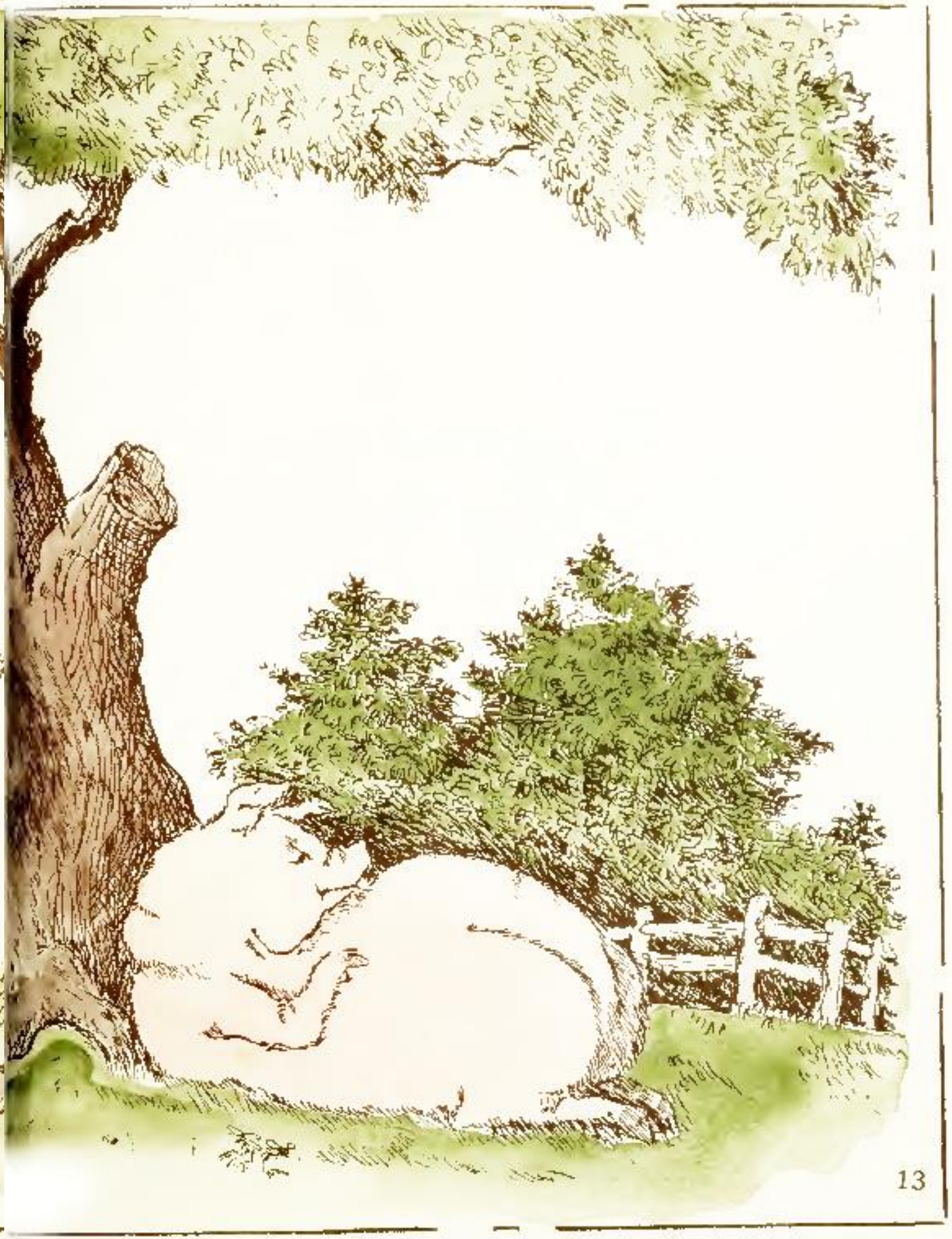

"सोचो कि तुम तैर रहे हो, सुअर।

तुम एक पंख हो।

तुम हवा के साथ बहते हुए एक पंख हो।"

सुअर ने लगभग सोते हुए आह भरी।

"अब तुम धीरे-धीरे तालाब के ऊपर बह रहे हो," वह बड़बड़ाया।

सुअर नींद में ही लुढ़क गया।

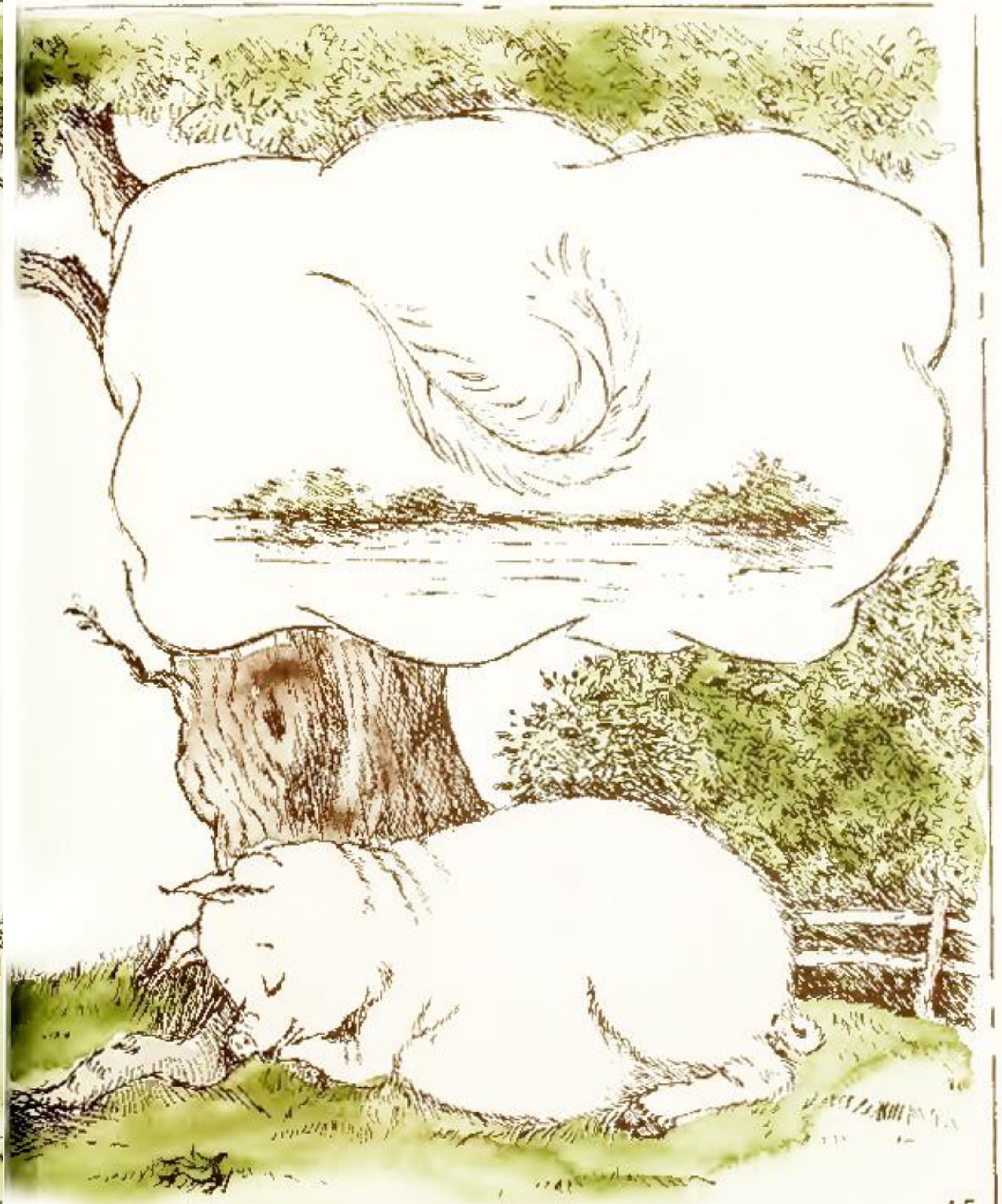

"उह!" वह आँखें खोलकर चिल्लाया।

वह पानी के एक बड़े पोखर में पड़ा हुआ था।

"तुम पंख नहीं हो, सुअर,

तुम सिर्फ एक सुअर हो।"

सुअर जमीन पर पड़ा हुआ इतना दुखी था कि वह उठ नहीं सका।

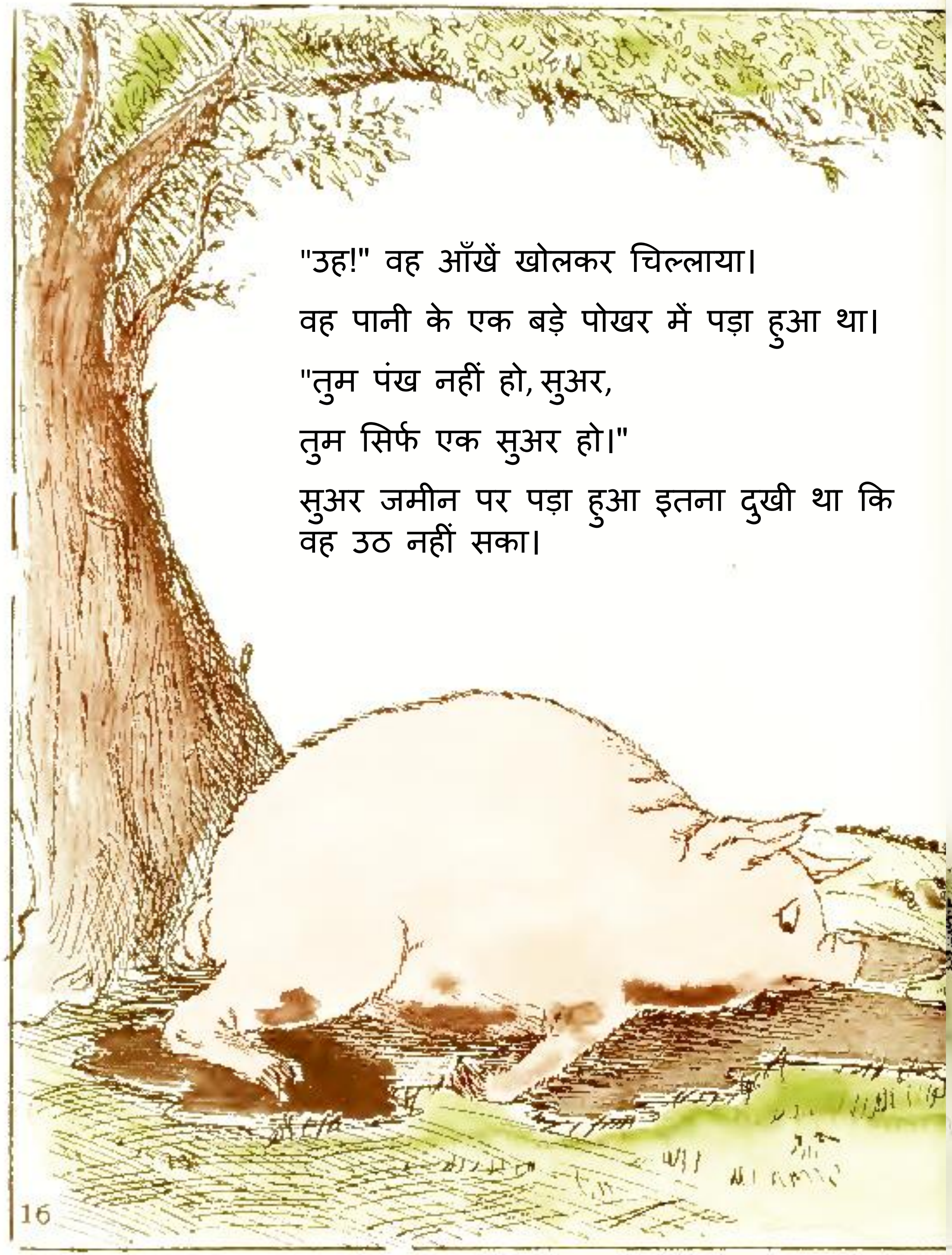

"मुझे पता है। मैं खुद को चुटकुले सुनाऊँगा।

तब मुझे फिर से अच्छा महसूस होगा।

खट, खट," सुअर ने कहा।

"वहाँ कौन है?" सुअर ने उत्तर दिया।

लेकिन वहाँ तो कोई नहीं था।

"मैं हार मानता हूँ!" सुअर चिल्लाया।
"मैं खुद को चुटकुले कैसे सुना सकता हूँ?"
सुअर ने बड़े गूलर के पेड़ को घूरकर देखा।
"काश मैं एक पेड़ होता।
पेड़ कभी अकेला महसूस नहीं करते।
सुअर ने आह भरी।
"मैं रोने वाला हूँ," उसने कहा।
"यही एक चीज है जो मैं खुद कर सकता हूँ।"

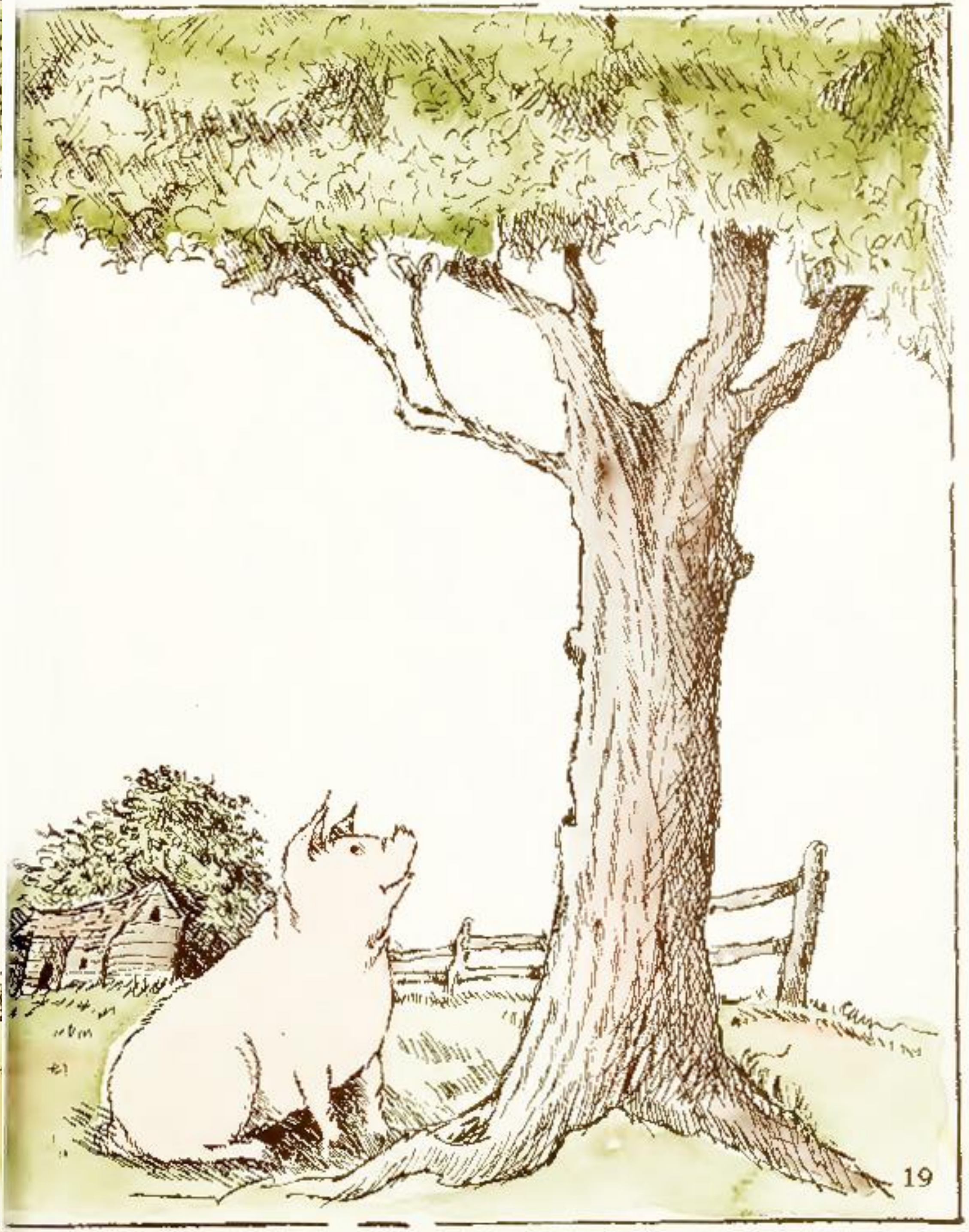

सुअर पीठ के बल लेट गया।
उसे कुछ गंध आई।
फिर उसे कुछ ज़्यादा गंध आई।
सिर के ऊपर एक चिड़िया ज़ोर से चहचहाई।
सुअर ने कहा, यहाँ बहुत शोर है।
"मैं अपने आप का रोना भी नहीं सुन सकता!"
उसने ऊपर
गूलर के पेड़ की ओर देखा।

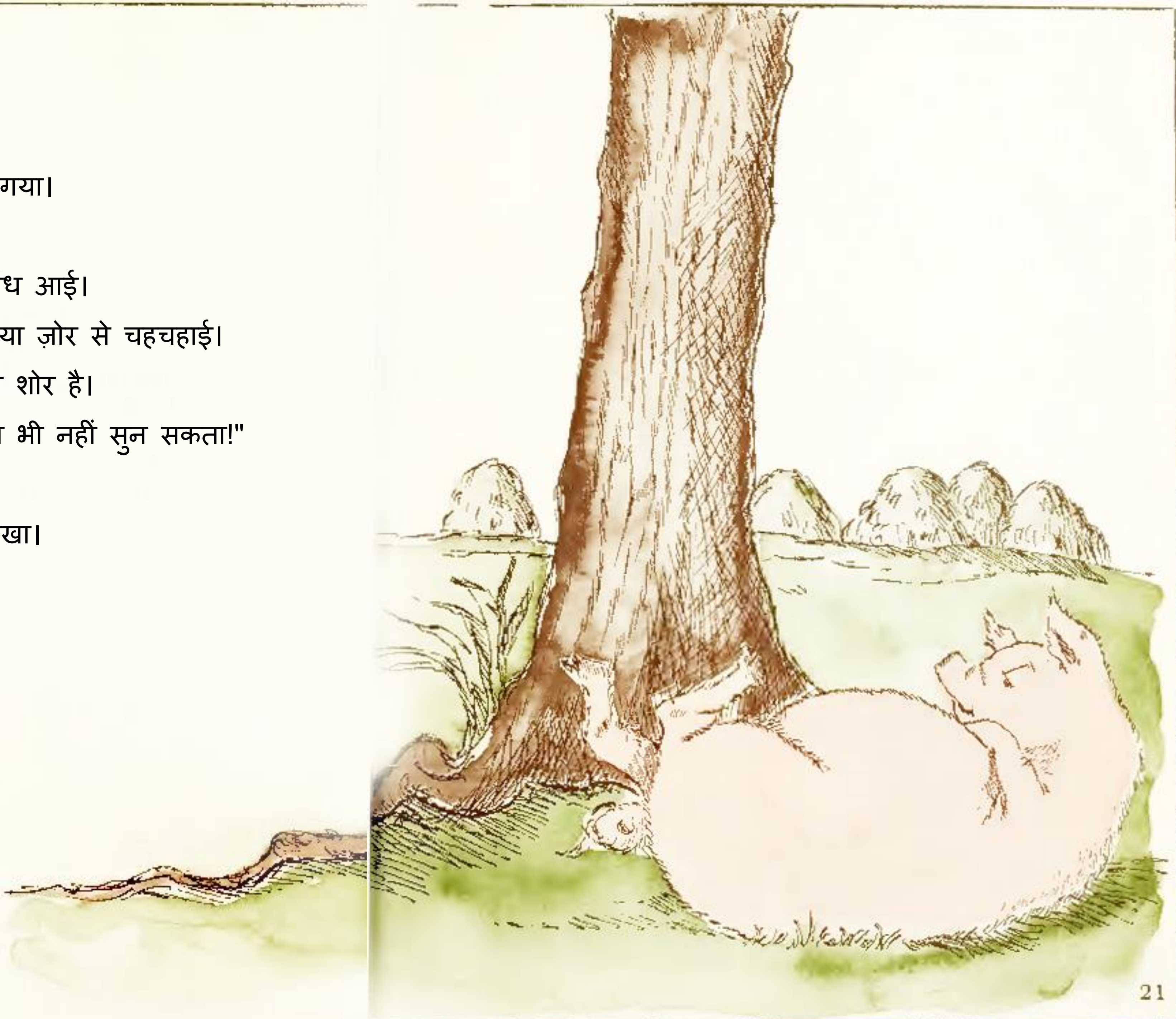

मम्मा रॉबिन अपने घोंसले के पास एक ऊँची शाखा पर बैठी थी।

अचानक, तीन छोटे रोबिन घोंसले से बाहर निकले।

मामा रॉबिन शाखा के चारों ओर एक छोटे से घेरे में उड़कर वापस आ गई।

पहले छोटे रॉबिन ने ऐसा ही किया।

फिर दूसरे छोटे रॉबिन ने भी ऐसा ही किया।

"सुअर," सुअर फुसफुसाया।

"क्या तुम विश्वास कर सकते हैं कि तुम चिड़िया के तीन बच्चों को पहली बार उड़ना सीखते हुए देख रहे हो?

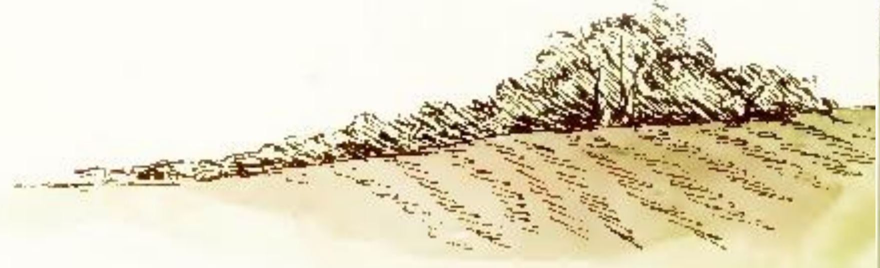

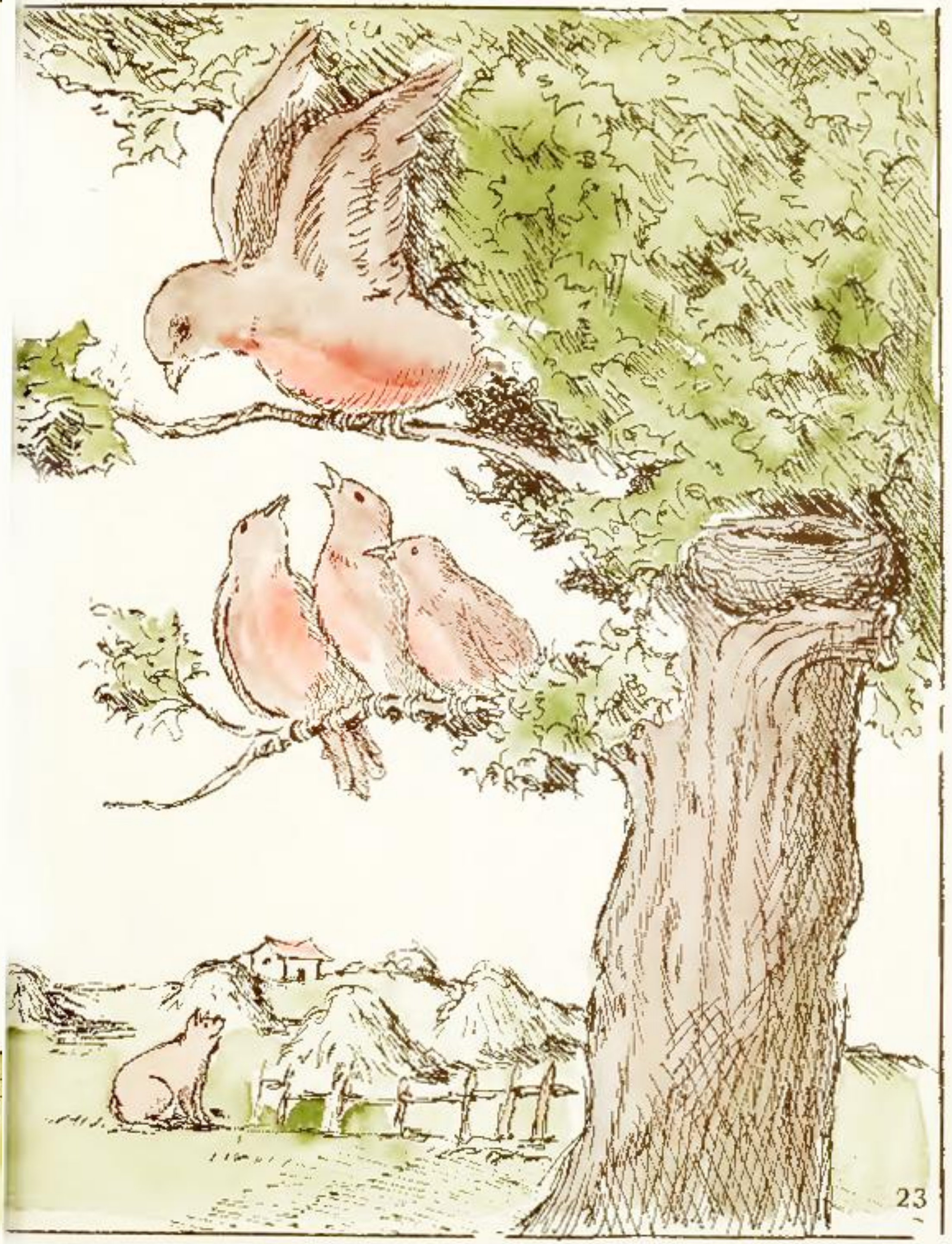

तीसरा छोटा पक्षी शाखा पर ही बैठा रहा और हिला ही नहीं।

उड़ो छोटी चिड़िया, सुअर चिल्लाया।

छोटे रॉबिन ने अपने छोटे-छोटे पंख फड़फड़ाए।

फिर वह भी एक बार शाखा के चारों ओर उड़ा और वापस आ गया।

"मुझे पता था कि तुम यह कर सकते हो,"

सुअर चिल्लाया।

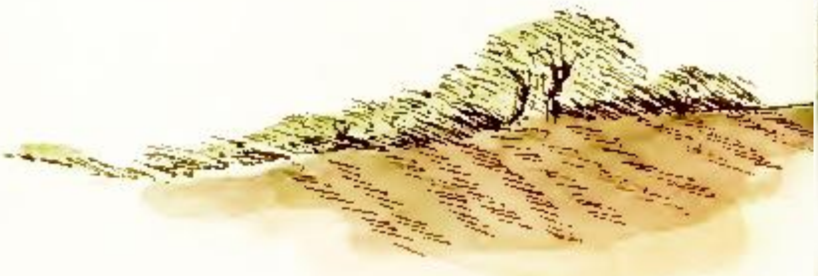

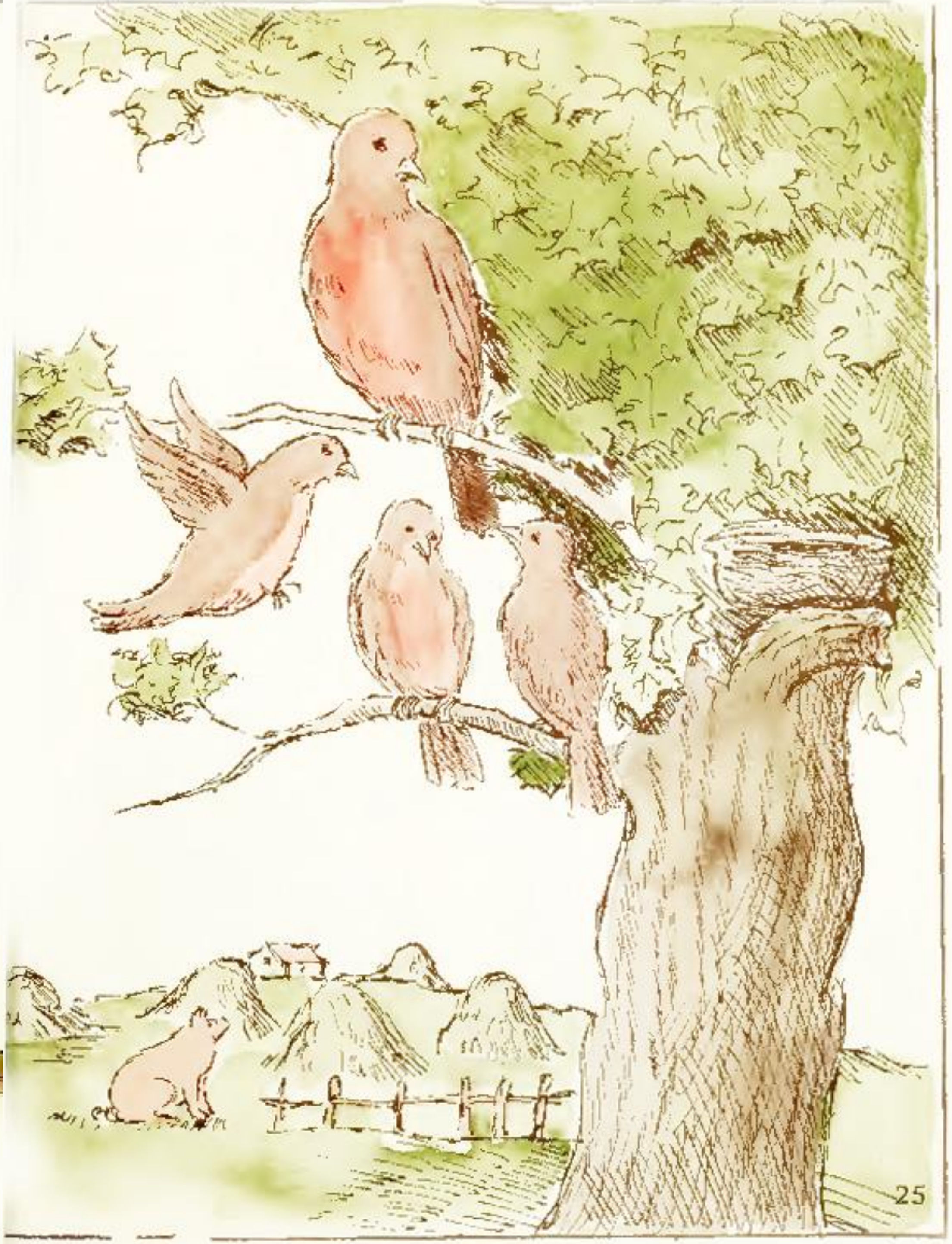

सुअर ने अपने पिछले पैरों पर थोड़ा नृत्य किया।

सुअर ने एक सिंहपर्णी का फूल उड़ाया जो उसकी नाक पर गुदगुदी कर रहा था।

"अरे तुम कहाँ उड़े जा रहे हो,"

सुअर ने फूल का पीछा करते हुए पूछा।

यह ठीक उसकी नांद के ऊपर तैर रहा था।

"तुम्हारी यात्रा अच्छी हो फूल," सुअर ने खाना खाने के लिए रुकते हुए कहा।

"खाना, तुम्हारा स्वाद इतना भी बुरा नहीं है।

हम्म! सुअर ने अपना पूरा सिर नांद में डाल दिया।

तब वह अपनी कीचड़ वाली जगह पर गया, और लोट-पोट हो गया।

"कीचड़, अब तुम्हें लग रहा होगा कि तुम वास्तव में कीचड़ हो ।"

"सुअर, किसी ने बुलाया।

सुअर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

वह चाहता था कि जो भी है वह चला जाए

ताकि वह कीचड़ में लोटता रहे।

"सुअर," कोई चिल्लाया।

"कौन है?" सुअर ने अनमने ढंग से कहा।

"ये मैं हूँ," बतख बोली।

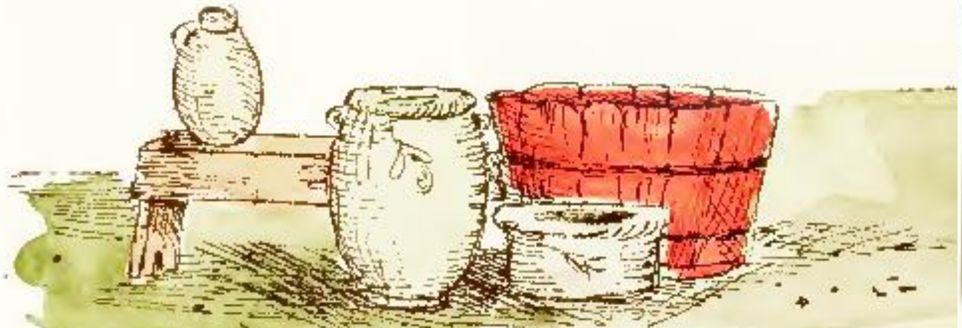

"तुम क्या कर रहे हो, सुअर?
"अपनी कीचड़ में लोट लगा रहा हूँ"?
"क्या तुम अकेले नहीं हो?" बत्तख ने पूछा।
"नहीं," सुअर ने खड़े होकर कहा।
"तुम अकेले कैसे आनंद ले सकते हैं?" बत्तख ने पूछा।
"यह आसान है," सुअर ने कहा।
"चूँकि तुम यहाँ हो,
मैं तुम्हें एक चुटकुला सुनाता हूँ।"

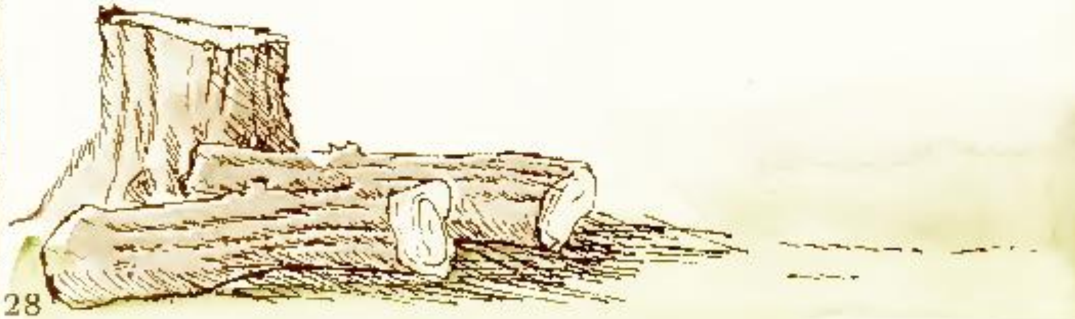

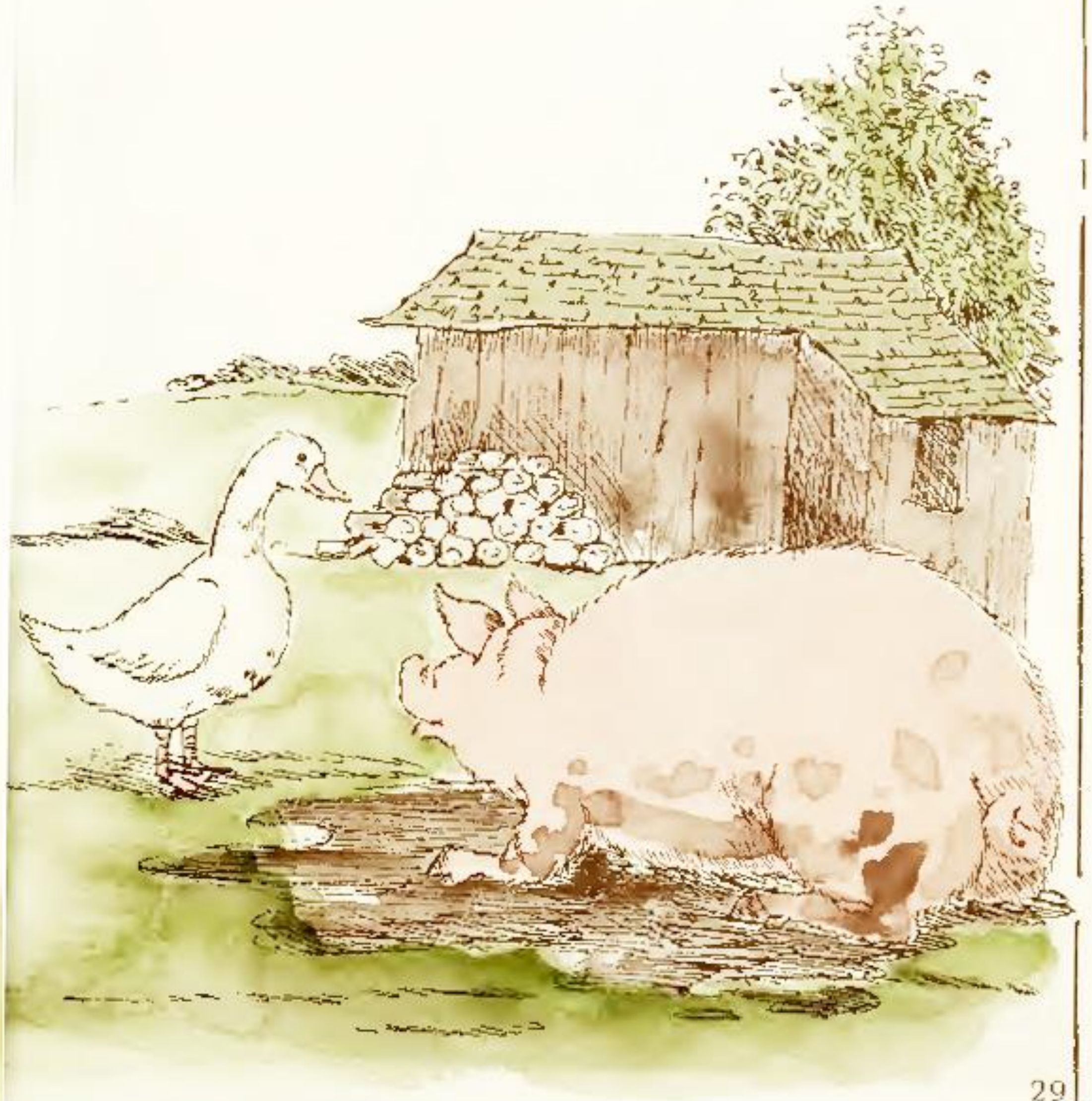

"कहो 'खट, खट' बत्तख।"

"खट, खट," बत्तख ने कहा।

"वहाँ कौन है?" सूअर ने कहा.

"मुझे नहीं पता," बत्तख ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

"तुम मूर्ख हो।" सूअर ने कहा.

बत्तख और सुअर इतनी ज़ोर से हँसे कि वे दोनों कीचड़ में गिर पड़े।

"अरे," बत्तख ने कहा।

"मैं नहाने के लिए अपने तालाब में जा रही हूँ।"

"मैं तुमसे बाद में मिलूँगा," सुअर ने कहा।

"मैं कीचड़ में स्नान कर रहा हूँ।"

बत्तख चली गई।

"मुझे खुशी है कि मैं एक पंख नहीं हूँ।
मैं एक सुअर हूँ।" सुअर ने ख़ुशी से कहा,
क्योंकि वह कीचड़ में बार-बार लोट-पोट हो रहा था।